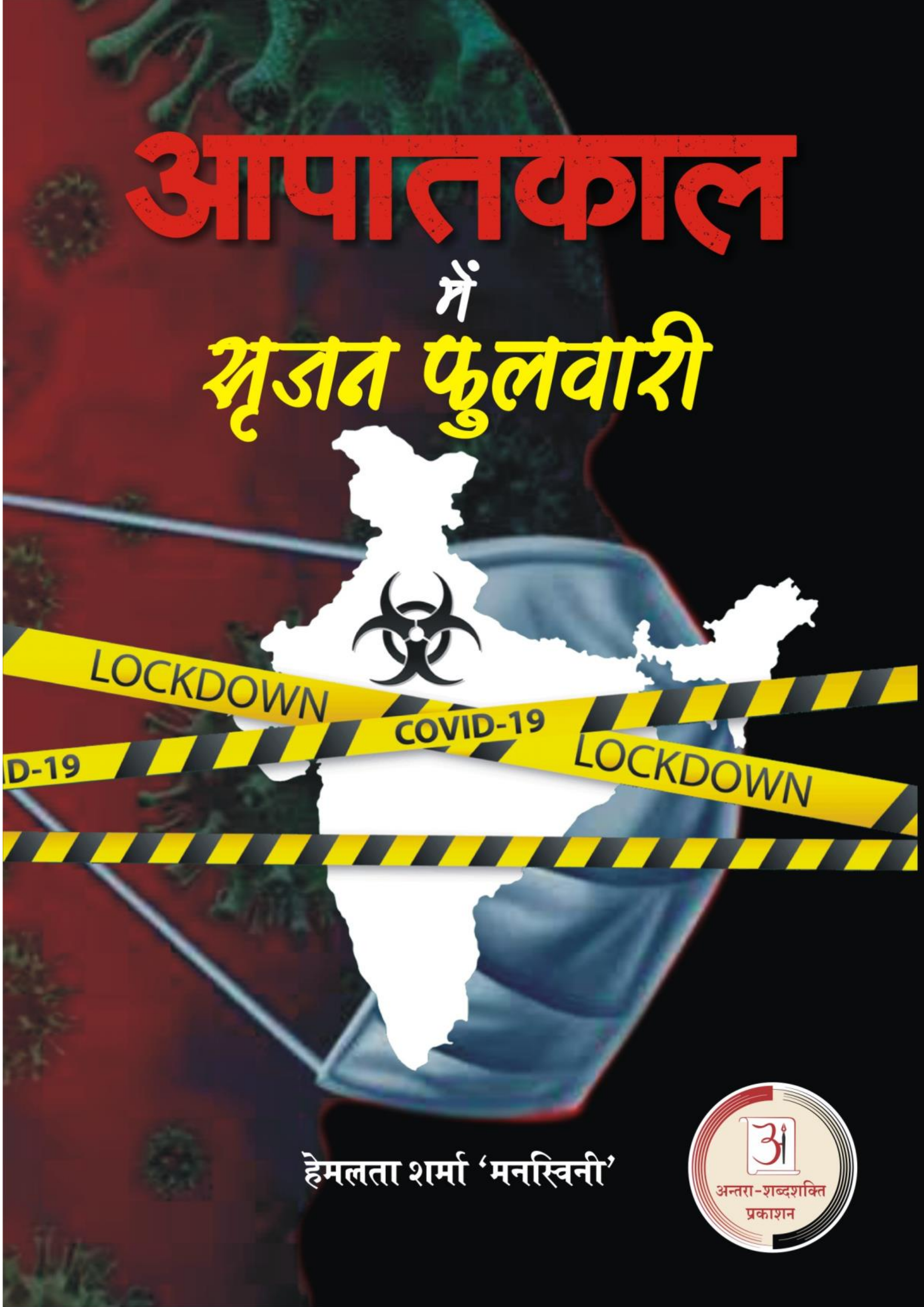
आपातकाल
में
सृजन फुलवारी
LOCKDOWN
COVID-19
LOCKDOWN
D-19
हेमलता शर्मा 'मनस्विनी'
अन्तरा-शब्दशक्ति
प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

हेमलता शर्मा 'मनस्विनी'

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-121-3
संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159
मोबाईल- 9424765259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण- 2020, हेमलता शर्मा 'मनस्विनी'
मूल्य- 50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
THE BOOK WRITTEN BY HEMLATA SHARMA 'MANSWINEE'
वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	तिरंगी सेना	6
2.	माँ	7
3.	तप	8
4.	कुदरत का कहर	9
5.	बिटिया	10
6.	ममता	11
7.	गौ माता	12
8.	मोहब्बत	13
9.	मन कहता है	14
10.	आंखें	15
11.	प्रकृति से प्यार	16
12.	मजहब	17
13.	कलम के सिपाही	18
14.	नारी शक्ति	19
15.	संकटहरण	20-21

तिरंगी सेना

हम भारत के वासी हैं, कोरोना भगा कर मानेंगे।
भारत माता के सिपाही हैं, जिद पूरी करके मानेंगे।

कोरोना भगाने की सौगंध, बच्चे बूढ़े ने खाई है।
घर घर में आज सिपाही है, महामारी मार दिखाएंगे।

भारत देश के वासी हैं, कोरोना भगा कर मानेंगे।
राष्ट्र पताका तीन रंग की, सेना भी तिरंगी है।

पुलिस डॉक्टर सफाई कर्मी, सब अपना फर्ज निभाएंगे।
हम भारत देश के वासी हैं, कोरोना भगा कर मानेंगे।

कोई कर रहा होमडिलीवरी, कोई भूखों को खाना दे।
रोगी ना रहे कोई घर में, मिल बीड़ाआज उठाएंगे।

भारत देश के वासी हैं, कोरोना भगा कर मानेंगे।
अनेकता में एकता, भारत की ऐसी खूबी है।

जब जब आई आपदा, हिंदू मुस्लिम भाई हैं।
घर-घर करके लाकडाउन, कोरोना को रोकेंगे।

कोरोना की खातिर, अब जान नहीं जाने देंगे।
हमारा देश के वासी हैं, कोरोना वायरस मानेंगे।

माँ

क्या कहूं
सकारे माँ का चूल्हा सुलगाना
भाई बहन संग आग तापना
गुड अदरक की चाय पीना
चाय में वो धुंये की खुशबू

क्या कहूं
आंगन की धूप होमवर्क करना
माँ के थप्पड़ खा कर ही नहाना
बैंगन का भर्ता पराठे लंच में रखना
टीचर का वो रोज मुर्गा बनाना

क्या कहूं
बस्ता फेंक सखियों संग खेलना
अंधेरा होने पर माँ का डांटना
धूल धूसरित कपड़े करना
सजीली गुड़िया रंगीले गुड्डा की वो बारात

क्या कहूं
माटी की हांडी चने की साग बनाना
बिर्रा की रोटी हाथों से गढना
भाई बहन के साथ माँ के पास बैठना
मक्खन गुड़ रोटी में वो अंगारों की खुशबू।

तप

चैत्र मास की संवेदनाएं, हम अंतस में भर लें
आओ हम भी थोड़ा तप कर लें।

चैत्र मास की प्रतिपदा को, ब्रह्मा सृष्टि निर्माण किया
हम भी दीन दुखियों का पेट भर लें,
आओ हम थोड़ा तप करले।

चैत्र मास में नवदुर्गा ने, भक्त रक्षा हेतु अवतार लिया
हम भी कोरोना की पीड़ा जन-जन से हर ले
आओ हम थोड़ा तप कर ले।

चैत्र मास नवमी तिथि, श्रीराम ने अवतार लिया
हम भी भारत के घर-घर में रामराज्य स्थापित कर ले
आओ हम थोड़ा तक कर लें।

चैत्र मास पूर्णिमा, हनुमान ने अवतार लिया
काम क्रोध मद लोभ की हम भी लंका दहन कर ले
आओ हम थोड़ा तप कर ले।

चैत्र मास में महामारी से
पूरा विश्व थर्राया हम भी एकांतवास कर लें
आओ हम भी थोड़ा तपकर ले।

कुदरत का कहर

अजीब ओ गरीब मंजर देखती हूं।
लोगों को रोते दरबदर देखती हूं।
शोहरत और चंद पैसों की खातिर,
अपनों के बिखरते घर देखती हूं।

जलते हैं देख दूसरों की शोहरत,
जलन से जलते शहर देखती हूं।
शोहरत से बदले चाल ढाल उनके,
घबरा, इधर से उधर देखती हूं।

चकाचौंध में कहीं खो ना जाएं बच्चे,
आंखों से भर भर नजर देखती हूं।
इतर से नहाता है कोई यहां पर,
किसी को पसीने से तर देखती हूं।

कोई बैठ खाता सोने के बिस्कुट,
फुटपाथ किसी का बसर देखती हूं।
उजड़ गए शाखों से आशियाने,
परिंदों के टूटते पर देखती हूं।

हमें मिलता जिनसे फल-फूल वायु,
फिर क्यों कटते नजर देखती हूं।
हमने ही लांघी कुदरत की सीमा,
कुदरत का कैसा कहर देखती हूं।

बिटिया

सखियों की सारी निशानी ले जा।
मोहब्बतों का भर के खजाना ले जा।
फूल ही फूल हो तेरे कदमों में,
मां की प्यारी वो दुआएं ले जा।

बुहारे पलकों से तेरे कांटे,
आंखों से बहता वो पानी ले जा।
दुल्हन सी सजी थी गुड़िया तेरी,
चूनर रंगीली वो धानी ले जा।

तेरी सुबह महकती थी जिससे,
भीनी महकती वो रात रानी ले जा।
होती बंद पलके जिसको सुन के,
नानी की मीठी वो कहानी ले जा।

बड़े जतन से रखना बिटिया इनको,
चूड़ी बिछिया वो सिंदूर दानी ले जा।
मिले संस्कार जो तुझको पिता से,
पल्लू में बांध वो खानदानी ले जा।

ममता

आकर इस मोड़ पर अक्सर
क्यों लड़खड़ाती है जिंदगी
ममता के फंदे में फंस कर
क्यों फड़फड़ाती है जिंदगी
उंगली पकड़कर सिखाया
जिन्हें पांव पांव चलना
पांव पर खड़े होते ही
क्यों भाग जाती है जिंदगी
बुनती थी उंगलियां स्वैटर
जिनके लिए
आज कल परसो लौटे
राह निहारती है जिंदगी
घर खाली आंगन सूना
रीता रीता मन का कोना
सुकून से बैठकर नहीं
दो घड़ी बतयाती जिंदगी
बड़े दुख दर्द सहे
जिनको बड़ा बनाने के लिए
उनकी बेरुखी से आखिर
क्यों रुलाती है जिंदगी
आकर इस मोड़ पर अक्सर
क्यों लड़खड़ाती है जिंदगी।

गौ माता

पूजित देव धन्य गौमाता।
कलयुग में मोक्ष प्रदाता।
कामधेनु की पुत्री प्यारी,
देव मनुज की पालन हारी।

तीज त्योहारों की बलिहारी,
गोबर लीप शुद्धि कर डारी।
मंगल काज होन जब लागे,
गौ गोबर गणेश बिराजे।

पंचगव्य पिय संत मनीषा,
आत्म शुद्धि कर भज जगदीशा।
पंचामृत करें शिव अभिषेका,
मृत्युलोक से मुक्ति विशेषा।

गढ़ गढ़ गोबर कंडे बनाए,
बाटी चूरमा के भोग लगाए।
गोबर खाद अति उत्तम न्यारी,
भागे रोग उपजे धान्य भारी।

अंतकाल तन छूटत भाई,
गोबर शुद्धिकर भूमि पौढ़ाई।
महिमा गौ गोबर वेद प्रकाशा,
गोबर करती लक्ष्मी बासा।

मोहब्बत

मोहब्बतों के गीत सुनाए नहीं जाते।
तीज त्योहार मनाए नहीं जाते।

शहादत दी जिन्होंने देश की खातिर,
शहीद वो अब भुलाए नहीं जाते।

छिन गई उनकी की बुढ़ापे की लाठी,
चंद सिक्कों से वहलाए नहीं जाते।

उठ गई हो जवां भाई की अर्थीयां,
बहनों से सावन मनाए नहीं जाते।

धूल गया बेटी के मांग का सिंदूर,
कुर्बानी के सबूत मांगे नहीं जाते।

जिस थाली में खाये उसी में छेद करें,
क्यों जयचंदो को भगाए नहीं जाते।

पाक की नापाक देखकर हरकतें,
अब दोस्ती के रिश्ते निभाए नहीं जाते।

उगलती हो जहर जिनकी जवाने,
आस्तीनो के सांप सहलाये नहीं जाते।
नोटों की खातिर फूहड़ता परोसते,
जमीर इस तरह लुटाये नहीं जाते।

मन कहता है

आज मन कहता है
चल रहे निरंतर बरसों से
मील का पत्थर तनिक सुस्ता लें
आज मन कहता है
चले हम अंगारों पर
कभी तपे सूर्य से
ठिठुरन भरी रातें
नहा ले चांदनी में
आज मन कहता है
पांव छलनी किये पथ
हृदय भी हुआ छलनी
कुछ छोड़गए राह में
किसी को हम छोड़ दें
आज मन कहता है
असीम शांति चहुंओर
भरे नव स्फुर्ती तन में
छाये मुख पर ओज
जूझने को कर्म पथ पर
आज मन कहता है
जीवन सांझ की बेला
सुहाना समंदर किनारा छेड़ दें सप्त राग
लीन होकर एक दूजे में आज मन कहता है

आंखें

माँ झोली भर के मैं लाई हूं आंखें।
तुम्हारे सामने में झाड़ती हूं आंखें।
निकली हुई सी है जो लाल लाल,
शराबी पड़ोसी वो अंकल की आंखें।
माँ झोली भर के लाई हूं आंखें।
पिचकी हुई सी जो हैं पीली-पीली,
बस वाले भैया वो अफीमची की आंखें।
माँ झोली भर के मैं लाई हूं आंखें।
हर नुक्कड़ पर जो देखती घूर घूर,
पानी पुरी चाट वाले की आंखें।
माँ झोली भर के मैंलाई हूं आंखें।
चश्मे के ऊपर से करें ताक झांक,
गुरु वो मास्टर जी की आंखें।
माँ झोली भर के मैं लाई हूं आंखें।
बेशर्म जो करें रिश्तो को तार-तार,
सगे वो रिश्तेदारों की आंखें।
माँ झोली भर के मैं लाई हूं आंखें।
फोड़ूगी अब मैं दरिंदों की आंखें।
उगलेगी शोले अब मेरी आंखें।
माँ झोली भर के मैं लाई हूं आंखें।

प्रकृति से प्यार

प्रकृति से प्यार करें चांदनी रात में।
तरुओं से बात करें चांदनी रात में।

वन उपवन की छटा निराली,
बसंत को निहार करें चांदनी रात में।

वसुंधरा की हरित ओढ़नी,
शबनम से श्रंगार करे चांदनी रात में।

जड़ चेतन है कुसुमित सारे,
तन को गुलजार करें चांदनी रात में।

चौथ चंद्र बनी तिरछी नैया,
चलो जलविहार करें चांदनी रात में।

श्वेत कमल से टिम टिम तारे,
मन को पतवार करें चांदनी रात में।

बादल इंदु की आंख मिचौली,
हम भी आंखें चार करें चांदनी रात में।

पोर पोर खिली हृदय मंजरी,
हम भी ताक झांक करें चांदनी रात में।

हम भर जाएं भक्ति भाव से,
कान्हा संग रास करें चांदनी रात में।

मजहब

मोहब्बतों के तराने सुनाने में डर लगता है।
उन पर की उपकार जताने में डर लगता है।
दुनिया सज गई बारूद के बाजारों से,
अब तो फुलझड़ियां जलाने में डर लगता है।

पीठ पर वार करना रही हो फितरत जिनकी,
उनको आहट जरा सी आने में डर लगता है।
प्रदूषित कर रहे जो कुदरती आबोहवा,
फिर क्यों उन्हें गंगा नहाने में डर लगता है।

रोज रोजा में दिन फांकें में कटती रातें जिनकी,
उनको लंगर में भी खाने में डर लगता है।
जमाने की निगाहों में हैवान भी पाकीजा बने बैठे हैं,
हुजरे में फकीरों के भी जाने में डर लगता है।

खुल गए शहर से गांव तक शराब खाने,
हमें तो मंदिर भी तन्हा जाने में डर लगता है।
धर्म मजहब को लेकर रंग बांट डाले हैं,
अब तो तिरंगा फहराने में डर लगता है।

कलम के सिपाही

चलाकर शब्द बान तकि तकि संधान
कलम की धार अब तेज होनी चाहिये।

एक-एक बने बान सौ-सौ के समान
भारत के जवानों का उबाल लहु चाहिये।

गफलत का खुमार राष्ट्र के कर्णधार
सोए हुए को चैन से अब जगाना चाहिए।

गई रसातल नीति खोटी रीति राजनीति
साहित्य शमशीर से संविधान बनाना चाहिये।

गाये न श्रंगार गान रखें निज स्वाभिमान
कलम के पुजारी को सत्य पथ चाहिये।

धर्मभेद जात पांत खत्म हो उत्पात
बापू जैसे अहिंसा के बीज बोना चाहिये।

जागे अभिलाष जन खाए जो कन-कन
मातृभूमि नमक का कर्ज चुकाना चाहिये।

सरस्वती हैं पूत भारत मां के सपूत
देख देख देश दशा बेचैन होना चाहिये।

लिए सौ बार जन्म भए कई बार मरन
त्याग निज आन बान शहीद होना चाहिये।

नारी शक्ति

हे नारी अब तो जाग
सुप्तावस्था का कर त्याग
सतयुग से कलयुग तक
सतीत्व पर प्रहार
तोड़ दे सारे तटबंध
प्रलय सम कर विस्तार
कंगन नूपुर विलग कर
खड़ग कृपाण कर श्रंगार
दुर्गा का स्वरूप धर
हो पापियों की चीत्कार
अग्नि परीक्षाएं दे दी बहुत
अब रख स्वाभिमान
चंडीका बनकर स्वयं
दुराचारियों का रक्त पान
महिषासुरों का मर्दन कर
नभ से गिरा दुष्टो पर गाज
धरा क्षितिज से व्योम तक
दसों दिशाएं व्यापे शक्ति राज
रेखा मिटा कर हाथ की
निज हाथ ले विधि का विधान
आत्म वल की जोत से
रच डारि तु नव संविधान।

संकट हरण

अरे जीवन पथ के पथिक,
विश्राम कर ले तनिक
कहां भागा जा रहा
अंधी दौड़ प्रतियोगिता
तूने ही तो मारी
अपने पांव कुल्हाड़ी

मालूम तो था ना
जीवन है चार दिना
ईट पत्थर से बनाए पहाड़
हरी-भरी वसुधा उजाड़
क्यों फैलाया आडंबर

वनों को काटकर
लुप्त चील गिद्धों के परिवार
मृत पशु था उनकाआहार
चूस लिया सारा अमृत
बसुधा की छाती चीरकर
जल थल नभ अतिक्रमण
किया प्रदूषित वातावरण

काल के गाल समा रहा
पूरा विश्व रो रहा
व्यभिचार से ना भरा मन

अरे मानव अब तो सुन
दुर्गा बनी कलि कालिका
भू उतरी बन चंडिका
समय रहते हो जा नतमस्तक
करेगी वह महामारी दमन

प्रकृति की कर पूजना
मरेगा तभी कोरोना
होगा तभी संकट हरण
संभव है मानव जीवन।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

रचनाकार

हेमलता शर्मा 'मनस्विनी'

पता-हेमलता राजेंद्र शर्मा
मुकाम पोस्ट, साई खेड़ा केसवानंद नगर,
तहसील- गाडरवारा, जिला- नरसिंहपुर (म.प्र.)
E mail- Sharmahemlata12345@gmail.com
Mobile - 8878571207, 7909965029

प्रिय साथियों,

कोरोना वायरस संक्रमण फैलने के कारण हम घर पर समय व्यतीत कर रहे हैं। ऐसे में साहित्य सर्जन अच्छा विकल्प है। अंतरा शब्दशक्ति के आवाहन पर ये १५ रचनाएं लिखने की प्रेरणा मिली।

आज देश की स्थिति, विवशता, नैतिकता, जिंदगी जैसे विषय मेरी रचनाओं में शामिल किए गए हैं।

वस्तुतः जब देश पर कोई संकट हो या समाज में किसी कुरीति से जन धन का अहित हो तो मेरे हृदय में जो वेदना होती है, वह किसी रचना के रूप में प्रस्फुटित हो जाती है। मेरी प्रत्येक रचना में समाज, प्रकृति की पीडा कहीं ना कहीं छुपी होती है।

जय हिंद

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क- 9424765259, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-121-3

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/